महादेवी वर्मा के रेखाचित्रों में सामाजिक सरोकार

*डॉ. कुलदीप सिंह मीना

शोध सारांश

छायावादी काव्य में करुणा एवं पीड़ा का स्वर मुखरित करने के लिए सुविख्यात कवयित्री महादेवी वर्मा ने अपनी गद्य रचनाओं 'अतीत के चलचित्र', 'स्मृति की रेखाएँ' और शृंखला की कड़ियाँ' तथा विवेचनात्मक गद्य द्वारा हिन्दी गद्य लेखन में नये प्रतिमान स्थापित किये हैं। यद्यपि संस्मरण, रेखाचित्र का प्रणयन उनसे पूर्व ही होने लगा था। लेकिन उनके गद्य साहित्य में सामाजिक सरोकार अधिक व्यापक व समाज से प्रत्यक्ष जुड़े हुए हैं। सन् 1930 के हमारे राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन के साथ किसान, मजदूर व स्त्री आदि के हितों से सम्बन्धित मुद्दे जुड़े और इनके लिए हुए जनसंघर्षों से साहित्य सर्वाधिक प्रभावित हुआ है। इस दृष्टि से महादेवी वर्मा के रेखाचित्र विशेष स्थान रखते हैं। ''रेखाचित्रों में उनकी अनुभूति मात्र प्रणयिनी की अनुभूति नहीं। उनमें मातृत्व की ममता, बहन का स्नेह और नारीत्व की विविध अनुभूतियों की अभिव्यक्ति है। उनमें जनजीवन में व्याप्त दुःख, अशिक्षा, उत्पीड़न आदि के प्रति विराट् सहानुभूतिपूर्ण करुणा और ममता है, कहीं–कहीं विद्रोह भी है, किन्तु वह ममता और करुणा से अभिभूत है, किन्तु महादेवी की कला में यदि कहीं जनजीवन और समाज का प्रतिबिम्बत मिलता है तो इन रेखाचित्रों में ही, इसलिए महादेवी के साहित्य में इनका विशिष्ट स्थान है।''[1] महादेवी के रेखाचित्रों समाज के निम्न वर्ग के दीन–हीन, उपेक्षित, प्रताड़ित और स्त्री–पुरुषों के मार्मिक संस्मरणात्मक रेखाचित्र हैं।

महादेवी के रेखाचित्रों में 'अतीत के चलचित्र' 'स्मृति की रेखाएँ' और पथ के साथी प्रमुख हैं। इन रेखाचित्रों में लेखिका ने सामाजिक विद्रूपताओं और अमानवीय स्थितियों का यथार्थ चित्रण किया है। इस सम्बन्ध में सुप्रसिद्ध आलोचक सूर्यप्रसाद दीक्षित ने लिखा है– ''इन चलचित्रों में समाज के सर्वहारा वर्ग की झाँकी है, उनके दुःख दैन्य की कहानी है, कुजड़ा, काछी, कुम्हार आदि पात्रों के कदर्थित जीवन की गाथा है, भागिन, वैश्या, विधवा और विकलांग नारियों की जीवन की विडम्बना का स्वर है, पतित जारज वर्ण संकर, तथाकथित नीच नराधम सन्तानों का लेखा–जोखा है और 'दरिद्रनारायण' की कथा है।''[2] वस्तुतः महादेवी के इन रेखाचित्रों में अनेक सामाजिक विसंगतियों को यथार्थ रूप से अभिव्यक्त किया है।

आज भूमण्डलीकरण के इस चकाचौंध से युक्त भौतिकवादी युग में हम अपने आप को विकसित और सुख–सुविधाओं से युक्त जीवन जीने के मामलों में काफी आगे पाते हैं। शिक्षा के प्रचार–प्रसार से हमारे इस सुविधायुक्त समाज में एक तरफ काफी परिवर्तन हुए हैं, वहीं दूसरी ओर पितृसत्तात्मक लबादा ओड़े व्यवस्था में कोई खास परिवर्तन नहीं हुए हैं, साथ ही वर्णव्यवस्था का विद्रूप चेहरा व सामाजिक स्तर पर हीनता बाहें फैलाये दैत्याकार रूप में खड़े हैं। महादेवी के रेखाचित्रों में नारी के प्रति

तथाकथित समाज की सोच के साथ नारी की समस्याओं को उजागर करने के साथ समाज की धज्जियाँ उड़ाई हैं। बाल–विवाह भारतीय समाज व्यवस्था की ऐसी विकृत परम्परा है, जिससे स्त्रियों के जीवन को नारकीय बना दिया जाता है। हालाँकि शिक्षा से जागृति जरूर आई है, लेकिन कमोबेश आज भी बदस्तूर जारी है। 'भक्तिन' नामक रेखाचित्र में बाल विवाह जैसी कुप्रथा पर महादेवी वर्मा प्रहार करती है– ''पाँच वर्ष की वय में उसे हण्डिया ग्राम के एक सम्पन्न गोपालक की सबसे छोटी पुत्रवधू बनाकर पिता ने शास्त्र से पिता ने दो पग आगे रहने की ख्याति कमाई और नौ वर्षीया युवती का गौना देकर विमाता ने बिना माँगे पराया धन लौटाने वाले महारानी का पुण्य लूटा।''[3]

बाल विवाह के बाद स्त्री के समक्ष विधवा जीवन जीना बड़ा कष्टप्रद होता है। एक स्त्री की मृत्यु के बाद पुरुष कितनी शादी कर सकता है? किन्तु अपने पति की मृत्यु के बाद स्त्री के लिए सुख–सम्मान के सारे दरवाजे सदैव के लिए बन्द हो जाते हैं। 'भाभी' रेखाचित्र में लेखिका ने भाभी के माध्यम से विधवा स्त्रियों का मार्मिक चित्रण किया है। ''उस दिन से वह घर, जिसमें न एक भी झरोखा था न रोशनदान, न एक भी नौकर दिखाई देता था, न अतिथि और न एक भी पशु रहता था, न पक्षी, मेरे लिए एक आकर्षण बनने लगे। उस समाधि जैसे घर में लोहे के प्राचीर से घिरे फूल के समान वह किशोरी बालिका बिना किसी संगी–साथी, बिना किसी प्रकार के आमोद–प्रमोद के मानो निरन्तर वृद्ध होने की साधना में लीन थी।''[4] एक ओर विधवा स्त्री सामाजिक रूप से तो तिरस्कृत होती ही है, वहीं दूसरी ओर उसका परिवार की सम्पत्ति पर भी कोई अधिकार नहीं होता है। महादेवी की 'बिट्टो' ऐसी ही पात्र है। उसके दोनों पुत्र सौतेली माँ होने के कारण सारी सम्पत्ति को अपने अधिकार में लेना चाहते हैं। ''सखी ने लिखा है कि वृद्ध विषम ज्वर से पीड़ित होकर अन्तिम घड़ियाँ गिन रहे हैं। बहुएँ तो नहीं, पर दोनों पुत्रों ने आकर मकान, रूपया आदि अपनी धरोहर सम्भालने का पुण्य अनुष्ठान आरम्भ कर दिया है। सुपुत्रों को यह तीसरी विमाता फूटी आँख नहीं सुहाती, अतः बेचारी बिट्टो का भविष्य पहले से अधिक अन्धकारमय है।''[5]

स्त्री को प्रताड़ित करने वाला पुरुष वर्ग तो है ही, स्त्रियाँ भी कुछ कम नहीं है। विमाता, सास, ननद, देवरानी, जेठानी भी अवसर मिलते ही दुखी और कष्टप्रद जीवन जी रही अबला को शारीरिक यातना और व्यंग्य बाणों से मानसिक पीड़ा पहुँचाने में भी पीछे नहीं रहती है। लेखिका ने 'भाभी' रेखाचित्र में ऐसे ही यथार्थ का अंकन किया है। भाभी के मन में विधवा होने के बाद भी रंग–बिरंगे कसीदे कढ़े वस्त्रों के प्रति ललक थी और इसी मोह के कारण न केवल उस निरपराधी को अपने ससुर और ननद की बेहोश हो जाने की स्थिति तक मार सहनी पड़ी। ''इसके उपरान्त जो हुआ वह तो स्मृति के लिए अधिक करुण है। क्रूरता का वैसा प्रदर्शन मैंने फिर कभी नहीं देखा। बचाने का कोई उपाय न देखकर ही कदाचित मैंने जोर–जोर से रोना आरम्भ किया, परन्तु बच तो वह तब सकी जब मन से ही नहीं, शरीर से भी बेसुध हो गई।''[6] इसी तरह स्त्री का स्त्री के प्रति दुर्व्यवहार का उदाहरण विमाता या सौतेली माँ का दिया है, जो सौतेले बच्चों से अमानवीय व्यवहार करती है। जिसे महादेवी वर्मा का 'बिन्दा' के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। पण्डित की पत्नी की अकेली बेटी बिन्दा को छोड़कर मृत्यु हो जाती है। वह दूसरा विवाह कर पत्नी लाता है। शीघ्र ही नवविवाहिता को पुत्र की प्राप्ति होती है पुत्र के प्रति जितना अधिक स्नेह ममत्व था, सपत्नी की बेटी बिन्दा के प्रति उतनी ही वह निर्भय हो उठी, जिसका परिणाम बिन्दा पर विपत्तियों के रूप में सामने आता है। यहाँ विमाता का दुर्व्यवहार तो सामने आता ही है, साथ ही पुत्र और पुत्री में असमानता भी सामने आती है। लेखिका ऐसे व्यवहार को भी सामने लाती है। ''यह सब तो ठीक था, पर उनका व्यवहार विचित्र–सा जान पड़ता था। सर्दी के दिनों

में जब हमें धूप निकलने पर जगाया जाता था, गर्म पानी से हाथ–मुँह धुलाकर मोजे, जूते और ऊनी कपड़ों से सजाया जाता था और मना–मनाकर गुनगुना दूध पिलाया जाता था, तब पड़ौस के घर में पंडिताइन चाची का स्वर उच्च से उच्चतर होता रहता था। यदि उस गर्जन–तर्जन का कोई अर्थ समझ में न आता, तो मैं उसे श्यामा के रँभाने के समान स्नेह का प्रदर्शन भी समझ सकती थी, परन्तु उसकी शब्दावली परिचित होने के कारण ही कुछ उलझन पैदा करने वाली थी। उठती है या आऊँ, 'बैल के से दीदे क्या निकाल रही है'', मोहन का दूध कब गर्म होगा', 'अभागी मरती भी नहीं' आदि वाक्यों में जो कठोरता की धारा बहती रहती थी, उसे मेरा अबोध मन भी जान ही लेता था।''[7] इस तरह महादेवी स्त्री की दशा को विविध दृष्टिकोणों से यथार्थ रूप से चित्रांकन करती है। इतना ही नहीं, 'चीनी फेरीवाले' रेखाचित्र ऐसे ही कठोर यथार्थ का प्रस्तुत करता है जब विमाता के घर में आने से दोनों भाई–बहिनों का जीवन ही परिवर्तित हो जाता है। वह विमाता इतनी पाश्विक है और घृणित है कि अपनी सौतेली बेटी को वैश्या के घृणित कार्य करवाने से नहीं चूकती है, जो एक सभ्य समाज के लिए शोभनीय नहीं है। भाई प्रतिदिन अपनी बहिन के साथ होने वाले दुष्कर्म को देखता है – ''बहिन का संध्या होते ही कायापलट फिर उसका आधी रात बीत जाने पर भारी पैरों लौटना, विशाल शरीर वाली विमाता की जंगली बिल्ली की तरह हल्के पैरों से बिछौने से उतरकर आना, बहिन के शिथिल हाथों से बटुए का छिन जाना और उसका भाई के मस्तक पर मुख रखकर स्तब्ध भाव से पडे रहना आदि क्रम ज्यों के त्यों चलते रहे।''[8]

इसी क्रम में एक दिन बहिन वापिस नहीं आती तथा हमेशा–हमेशा के लिए लुप्त हो जाती है। इसके साथ अपनी बहिन की तलाश में भाई ऐसे लोगों के चंगुल में फंसकर यातनाएँ सहता रहता है।

स्त्री के साथ समाज के हाशिए पर जी रहे सामाजिक रूप से तिरस्कृत, उपेक्षित, सताये गये लोगों के दुःख–दर्द को आवाज देने के साथ दलितों, शोषितों अशिक्षितों को अपने रेखाचित्रों के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। 'घीसा' रेखाचित्र का पात्र 'घीसा' भारतीय ग्रामीण सामाजिक ताने–बाने के उन उपेक्षित, तिरस्कृत बालकों का प्रतिनिधित्व करता है जो गरीबी और अशिक्षा के बीच एक खास प्रतिभाशाली होते हैं। अपने पिता की भाँति भला आदमी बनने और अच्छा जीवन जीने के लिए तथाकथित समाज के द्वारा थोपे गये काम को छोड़कर बढ़ईगिरी सीखी उसी तरह घीसा के मन में कुछ करने और बनने की तमन्ना शुरू से ही थी। उसकी सचेत आँखों में जिज्ञासा थी। अपनी महत्वाकांक्षा को पूरा करने के लिए उसमें पढ़ने–लिखने की पूरी लगन थी। ''पर उसकी सचेत आँखों में न जाने कौनसी जिज्ञासा भरी थी। वे निरन्तर घड़ी की तरह खुली मेरे मुख पर टिकी ही रहती थी। मानो मेरी सारी विधा–बुद्धि को सीख लेना ही उनका ध्येय था।''[9] सामाजिक दृष्टि से निम्न जाति और गरीब होने के कारण दूसरे अन्य बच्चों के जैसा स्तर घीसा का नहीं था। जिससे दूसरे बच्चे उससे घृणा करते थे। इतना ही नहीं, गाँव के लोगों ने लेखिका को घीसा को अवैध सन्तान और उसकी माँ को चरित्रहीन बताया ताकि वो घीसा से उपेक्षापूर्ण व्यवहार करने लगे। पर मानव स्वभाव की पारखी महादेवी का उनकी बातों पर कोई असर नहीं पड़ा। बल्कि वह घीसा से ओर अधिक प्यार करने लगी। ''यह कथा अनेक क्षेपकोमय विस्तार के साथ सुनाई तो गयी थी मेरा मन फेरने के लिए और मन फिरा भी, परन्तु किसी सनातन नियम से कथावाचक की ओर न फिर कर कथा के नायकों की ओर फिर गया और इस प्रकार घीसा मेरे और अधिक निकट आ गया। वह अपना जीवन सम्बन्धी अपवाद कदाचित पूरा नहीं समझ पाया था, परन्तु अधूरे का भी प्रभाव उस पर कम न था, क्योंकि वह सबको अपनी छाया से इस प्रकार बचता रहता था, मानो उसे कोई छूत की बीमारी हो।''[10]

इसी तरह लेखिका ने 'बदलू' नामक रेखाचित्र में गाँव–कस्बों के गरीब कुम्हार जाति के लोगों की निर्धनता और दैन्य द्वारिद्रय से भरे करुण जीवन का यथार्थ प्रस्तुत कर भारत के असंख्य दीन–हीनों के प्रति सहानुभूति उत्पन्न कर कुछ करने के लिए प्रेरित करती है। साथ ही देश में ऐसे अनेक प्रतिभा सम्पन्न कलाकार मौजूद हैं, जिनकी नैसर्गिक कला प्रतिभा गरीबी के कारण छिपी हुई है, उनमें क्षमता है। ऐसे उदीयमान कलाकारों को समुचित प्रोत्साहन दिया जाए और उन्हें साधन–सुविधाएँ उपलब्ध करायी जायें। 'बदलू' के परिवार का जीवन ऐसी ही विपन्नता, गरीबी और अभावों के बीच घिसटता हुआ चलता रहता है। लेखिका बदलू की प्रतिभा को पहचानती है और उसे समझाती हे कि वह बेडौल घड़ों–मटकों के स्थान पर सुन्दर, नक्काशीदार झंझर और सुराहियाँ बनाने लगे पर वह अपने परमपरागत तरीके को नहीं छोड़ना चाहता। महादेवी बच्चों को दिखाने के लिए देवी–देवताओं के रंग बिरंगे चित्र ले जाती है तो बदलू की दृष्टि उन पर पड़ती है। उनमें से सरस्वती का चित्र बदलू को देती है। बार–बार प्रयास करने से बदलू एक सुन्दर मूर्ति गढ़ने में सफल हो जाता है। ''विश्वास करना सहज न होने के कारण मैं कभी मूर्ति और कभी बदलू की ओर देखती रह गई। क्या यह वही कुम्हार है, जिसने एक वर्ष पहले सुन्दर घड़े बनाने में असमर्थता प्रकट की थी? मुख से निकल गया – 'तुम तो गाँव के गँवार कुम्हार हो, जब नक्काशीदार घड़ा बनाना असम्भव लगता था, तब ऐसी मूर्ति बनाने की कल्पना कैसे कर सके?''[11]

इसी भाँति 'अलोपी' नामक रेखाचित्र में लेखिका ने एक ऐसे अन्धे, परिश्रमी, ममतामय एवं मानवीय सौहार्द्र सम्पन्न व्यक्तित्व का चित्र उपस्थित किया है। जहाँ नेत्रहीन अपने आप को सूरदास कहलाने वाले व्यक्ति भीख माँगकर पेट भरकर ही अपना जीवन मानने लगते हैं और समाज उन्हें बोझ मानता रहता है। 'अलोपी' ऐसा पात्र है जो अपने पुरुषार्थ एवं परिश्रमशीलता पर विश्वास कर कोई काम–धंधा करना चाहता है और इसी क्रम में वह महादेवी के सम्पर्क में आता है। लेखिका के मन में जिज्ञासा होती है कि वह अन्धा होते हुए क्या काम कर सकता है, वो तुरन्त जवाब देता है कि वह लड़के की सहायता से गाँव के खेतों से सस्ती और अच्छी सब्जी लाकर छात्रावास के भोजनालय के लिए प्रबन्ध कर सकता है। कुछ तो सहज दया, करुणा भाव के कारण तथा कुछ उस अन्धे युवक की बातों से प्रभावित होकर महादेवी जी ने यह कार्य उसे सौंप दिया। पहले यह निर्णय मेटून और छात्राओं को उचित नहीं लगा। किन्तु दो–चार दिन बाद ही अलोपी ने अपनी तत्परता, ईमानदारी और सादगी से सबका मन जीत लिया। ''कुछ प्रकृतिस्थ होकर मैंने प्रश्न किया– 'तुम यहाँ कौनसा काम कर सकते हो? अलोपी पहले से ही सब सोचकर आया था – वह देहात के खेतों से सस्ती और अच्छी तरकारियाँ लायेगा – मेरे लिये और छात्रावास की विद्यार्थिनियों के लिए। अपने जीवनव्यापी अंधेरे में वह ऐसा व्यवसाय में उलझा हुआ कर्त्तव्य किस प्रकार सम्भाल सकेगा, यह पूछने का अवकाश न देकर अलोपी ने अपने फुफेरे भाई रग्घू की ओर संकेत कर बताया कि उन दोनों के सम्मिलित पुरुषार्थ के कठिनतम कार्य भी सम्भव होते रहे हैं।''[12] इस प्रकार महादेवी अलोपी की तत्परता और कर्तव्यनिष्ठा से बेहद प्रभावित हुई जो अन्त तक महादेवी के मन को प्रभावित करता रहा।

वैसे तो महादेवी के रेखाचित्रों के अधिकांश पात्र गरीबी, उपेक्षा, तिरस्कार और भूख से जूझते नजर आते हैं, किन्तु लछमा नामक पहाड़ी युवती की हृदयविदारक गाथा वर्तमान समाज व्यवस्था के हृदयहीन होने के प्रमाण के साथ गरीब लोगों के पशुवत् स्थिति की यथार्थता को उजागर करती है। लछमा महादेवी को बताती है कि ''जब बहुत भूखा हुआ, तब पीली मिट्टी का एक गोला बनाकर मुँह में रखा और आँख मूँद कर सोचा– लड्डू खाया, लड्डू खाया।' बस फिर बहुत–सा पानी पी लिया और सब ठीक हो गया।''[13]

आजादी के सत्तर साल बाद विकास के ढकोसला पीटने वाले हमारे देश में गरीब, मजदूर और निम्न वर्ग की कमोबेश यही स्थिति है। महादेवी ने अपने रेखाचित्रों में इस कटु यथार्थ को उजागर किया है।

महादेवी ने अपने रेखाचित्रों में समाज की तमाम विसंगतियों के साथ उच्च वर्ग की अमानवीयता तथा हृदयहीनता का परिचय भी मिलता है। वह अपने स्वार्थ के लिए नैतिकता और मानवीयता की सारी मर्यादाओं को भूल जाता है। निम्न एवं गरीब वर्ग उनके लिए सदियों से चली आ रही धारणा के अनुसार पशुतुल्य होता है। 'जंग बहादुर' रेखाचित्र में इसी उच्च वर्ग की मानसिकता का चित्रांकन किया है। ''यात्री भी एक रुपया प्रतिदिन देकर कुली को खरीदता है, इसलिए लाभ की दृष्टि से तीन दिन का रास्ता एक दिन में तय करने की इच्छा स्वाभाविक है, अन्यथा वह घाटे में रहेगा। यात्री तो बैठा–बैठा ऊँघता रहता है, पकवान सूखे मेवे आदि उसके साथ होते हैं, अतः अधिक थकावट या अधिक भूख का प्रश्न ही नहीं उठता, पर वह कुलियों के विराम और भोजन के समय में से घटता रहता है। सवेरे ही कह देता है कि बीस मील का रास्ता तय करना होगा चाहे जिस तरह चलो, पर शाम तक इतना न चलने पर मजदूरी काट ली जाएगी और बेचारे मनुष्य पशु हाँफ–हाँफकर मुँह से फिचकुर हुए दौड़ते हैं।''[14] ठीक इनके विपरीत गरीब व्यक्ति अपने लाभ व स्वार्थ से ऊपर उठकर सदैव इंसानियत और परोपकार को महत्त्व देता है।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि महादेवी वर्मा के संस्मरणात्मक रेखाचित्र उनके गहरे एवं संवेदनात्मक सामाजिक सरोकारों के परिचायक है। इनमें तत्कालीन समाज ही नहीं वर्तमान समाज की विसंगतियों की झलक साफ देखी जा सकती है। अतः कहा जा सकता है कि ये रेखाचित्र ख्यातिप्राप्त सुप्रसिद्ध, प्रतिष्ठित व्यक्तियों के रेखाचित्र न होकर समाज की मुख्यधारा से दूर हाशिए का जीवन जी रहे निम्न वर्ग के दीन–हीन, दलित, उपेक्षित, प्रताड़ित स्त्री–पुरुषोंके मार्मिक संस्मरणात्मक रेखाचित्र हैं, जो हमारे अन्दर इन वर्गों के प्रति सहानुभूति ही पैदा नहीं करते वरन् समस्त सामाजिक व्यवस्था को बदलने की बैचेनी भी पैदा करते हैं। ये रेखाचित्र सामाजिक पृष्ठभूमि में यथार्थ की भित्ति पर उकेरे गये हैं।

***सहायक आचार्य**
हिन्दी विभाग
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर (राज.)

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

1. महादेवी : चिंतन व कला – सं. इन्द्रनाथ मदान, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 1965, पृ.सं. 151
2. महादेवी का गद्य – सूर्यप्रसाद दीक्षित, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, 2008, पृ.सं. 10
3. भक्तिन (स्मृति की रेखाएँ) – महादेवी वर्मा, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 1992, पृ.सं. 08
4. भाभी (अतीत के चलचित्र) – महादेवी वर्मा, लोकभारती प्रकाशन (दूसरा पेपरबेक संस्करण) 2010, पृ. सं. 27
5. बिट्टो (अतीत के चलचित्र) – महादेवी वर्मा, लोकभारती प्रकाशन (दूसरा पेपरबेक संस्करण) 2010, पृ. सं. 49

6. भाभी (अतीत के चलचित्र) – महादेवी वर्मा, लोकभारती प्रकाशन (दूसरा पेपरबेक संस्करण) 2010, पृ. सं. 30
7. बिन्दा (अतीत के चलचित्र) – महादेवी वर्मा, लोकभारती प्रकाशन (दूसरा पेपरबेक संस्करण) 2010, पृ. सं. 32
8. चीनी फेरेवाले (स्मृति की रेखाएँ) – महादेवी वर्मा, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली 1972, पृ. सं. 24
9. घीसा (अतीत के चलचित्र) – महादेवी वर्मा, लोकभारती प्रकाशन (दूसरा पेपरबेक संस्करण) 2010, पृ. सं. 58–59
10. वहीं, पृ.सं. 60
11. बदलू (अतीत के चलचित्र) – महादेवी वर्मा, लोकभारती प्रकाशन (दूसरा पेपरबेक संस्करण) 2010, पृ. सं. 88
12. अलोपी (अतीत के चलचित्र) – महादेवी वर्मा, लोकभारती प्रकाशन (दूसरा पेपरबेक संस्करण) 2010, पृ. सं. 74
13. लछमा (अतीत के चलचित्र) – महादेवी वर्मा, लोकभारती प्रकाशन (दूसरा पेपरबेक संस्करण) 2010, पृ. सं. 91
14. जंग बहादुर (स्मृति की रेखाएँ) – महादेवी वर्मा, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 1992, पृ. सं. 33